Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पद्मपुराण में लोककथाएँ और उनकी नैतिक शिक्षा : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. बालकृष्ण प्रजापति* श्रीमती ओमवती अहिरवार**

* सहायक प्राध्यापक (संस्कृत) शासकीय एस.जी.एस. पी.जी महाविद्यालय, गंजबासौदा, जिला विदिशा (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, शासकीय संजय गांधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंजबासौदा, जिला विदिशा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय पुराण-साहित्य केवल धार्मिक ग्रंथों का संकलन नहीं, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों का विस्तृत स्रोत है। अष्टादश महापुराणों में पद्मपुराण अपने विस्तृत आख्यान-संग्रह, लोक-कथात्मक शैली और नीति-प्रधान शिक्षाओं के लिए विशिष्ट स्थान रखता है। इस शोध-पत्र में पद्मपुराण में वर्णित लोककथाओं का विश्लेषण किया गया है सत्य, दया, करुणा, समता, पर्यावरण-संरक्षण, अहिंसा, भक्ति और परिवार-नीति जैसे नैतिक मूल्यों पर विशेष ध्यान देते हुए। संस्कृत उद्धरणों सहित यह अध्ययन इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि पद्मपुराण की लोककथाएँ भारतीय समाज के नैतिक चरित्र-निर्माण, सामाजिक सुधार और आचार-नीति को गढ़ने में महत्त्वपूर्ण रही हैं।

शब्द कुंजी – पद्मपुराण, लोककथा, नैतिक शिक्षा, धर्म, नीति, संस्कृत उद्धरण, पुराण-साहित्य।

प्रस्तावना – भारत में पुराणों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वेद पुरुषार्थों को जनसामान्य तक पहुँचाने हेतु पुराणों की रचना हुई। पद्मपुराण, जिसकी गणना अष्टादश महापुराणों में होती है, लोककथाओं, व्रतकथाओं और ऐतिहासिक आख्यानों का समृद्ध संग्रह है। पद्मपुराण के विभिन्न खण्ड सृष्टिखण्ड, भूमिखण्ड, स्वर्गखण्ड, पातालखण्ड, उत्तरखण्डकृमें अनेक कथाएँ ऐसी हैं जो लोक-विश्वासों और नैतिक आदर्शों को स्थापित करती हैं। इन कथाओं का स्वरूप अत्यन्त सरल, भावपूर्ण और शिक्षाप्रद है यही इन्हें 'लोककथा' के अंतर्गत प्रतिष्ठित करता है।

शोध की समस्या – यह शोध-पत्र निम्नलिखित समस्या को केंद्र में रखता हैकृ 'पद्मपुराण में वर्णित लोककथाएँ भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों और आचार-व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?'

शोध के उद्देश्य :

1. पद्मपुराण की प्रमुख लोककथाओं का अध्ययन करना।
2. उन कथाओं में निहित नैतिक मूल्यों को स्पष्ट करना।
3. लोककथाओं की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपयोगिता का विश्लेषण।
4. संस्कृत उद्धरणों के माध्यम से कथाओं के धर्म-तत्व को स्थापित करना।

शोध-विधि :

1. **पाठ विश्लेषण विधि –** पद्मपुराण के विभिन्न प्रामाणिक संस्करणों में उपलब्ध कथाओं का अध्ययन।
2. **द्वितीयक स्रोत-अनुसंधान-**ग्रंथ, टीकाएँ, आलोचनात्मक ग्रंथ।
3. **तुलनात्मक दृष्टिकोण से लोककथाओं की सामाजिक उपयोगिता का मूल्यांकन।**

पद्मपुराण में लोककथाओं का स्वरूप पद्मपुराण की कथाएँ निम्न विशेषताओं से सम्पन्न हैं:

1. सरल और सुगम कथात्मक शैली
2. नैतिक संदेश का प्रकटीकरण
3. धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य की स्पष्ट रेखा
4. लोक-जीवन, प्रकृति और व्यवहार-नीति से गहरा सम्बन्ध
5. आदर्श पात्रों के माध्यम से मार्गदर्शन

पद्मपुराण की प्रमुख लोककथाएँ एवं उनकी नैतिक शिक्षा पद्मपुराण में वर्णित प्रमुख लोककथाओं का विस्तृत विश्लेषण है—

1. **सत्यभक्त ब्राह्मण की कथा –** सत्य की सर्वोच्चता यह कथा उत्तारखण्ड में वर्णित है। एक निर्धन ब्राह्मण संकटों में भी सत्य का त्याग नहीं करता।

उद्धरण – 'सत्यं परं परो धर्मः, सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः।'

नैतिक शिक्षा –

- सत्य का पालन मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाता है।
- विपत्ति में भी धर्म का पालन जीवन को गौरव प्रदान करता है।
- असत्य और छल अंततः नष्ट हो जाते हैं।

2. **शिवभक्त शिकारी की कथा —** भक्ति का निष्कपट स्वरूप यह कथा लोक-प्रचलित भी है। शिकारी अनजाने में शिवपूजन कर लेता है और उसकी हृदय-शुद्धि होती है।

उद्धरण – 'भक्तिर्भवति सर्वेषां निष्कपटहृदये सदा।'

नैतिक शिक्षा –

- भक्ति का आधार हृदय की पवित्रता है, औपचारिकता नहीं।
- अनजाने में किया गया शुभ कर्म भी फलदायी होता है।
- अहिंसा और करूणा मनुष्य को संस्कारित करती हैं।

3. **चण्डाल-धर्म कथा –** समता और मानवता का संदेश इस कथा में एक चण्डाल स्त्री राजा को करुणा और समानता का पाठ पढ़ाती है।

उद्धरण – 'न जातिर्नैव वर्णोऽत्र गुणदोषौ तयोरिह।'

नैतिक शिक्षा –

- मनुष्य की श्रेष्ठता उसके कर्म में है, न कि जाति में।
- करुणा ही धर्म का मूल कारण है।

- सामाजिक अहंकार समाज को विखण्डित करता है।

4. वृक्ष-उपासना कथा — पर्यावरण संरक्षण का संदेश एक किसान पेड़ काटने जाता है, पर वनदेवी उसे रोकती है।

उद्धरण – 'वृक्षाणां संरक्षणं धर्मो महत्तम:।'

नैतिक शिक्षा –

- प्रकृति मानव जीवन का आधार है, उसकी रक्षा अनिवार्य है।
- पर्यावरण-नैतिकता पुराण युग से भारत की परम्परा है।
- वृक्षों का संरक्षण जीवन-संरक्षण का पर्याय है।

5. पतिव्रता स्त्री की कथा — निष्ठा और संयम का आदर्श इस कथा में स्त्री अपनी पवित्रता और निष्ठा की शक्ति से दुष्ट राजा को पराजित करती है।

उद्धरण – 'पातिव्रत्यमिदं स्त्रीणां परमं बलमुच्यते।'

नैतिक शिक्षा –

- निष्ठा और सत्य का बल अपराजेय है।
- स्त्री-धर्म परिवार और समाज को स्थिरता प्रदान करता है।
- दुष्टता का अंत सदैव विनाश में होता है।

नैतिक मूल्यों का समग्र विश्लेषण पद्मपुराण की कथाओं में प्रमुख नैतिक मूल्य निम्नलिखित हैं

1. सत्य 'सत्यं नास्ति परं बलम्।'
2. दया और करुणा कई कथाओं में करुणा को धर्म का मूल बताया गया है।
3. अहिंसा शिवभक्त शिकारी कथा में हिंसा का अंत भक्ति में रूपांतरित होता है।
4. समता और मानवता चण्डाल-धर्म कथा इस मूल्य का चरम रूप है।
5. पर्यावरण-संरक्षण वृक्ष-उपासना कथा में प्रकृति को धर्म का स्वरूप माना गया है।
6. एकनिष्ठ भक्ति भक्ति सरल हृदय से उत्पन्न होती है, अनुष्ठानों से नहीं।
7. स्त्री-धर्म और पारिवारिक मूल्य पातिव्रत्य कथा में स्त्री की शक्ति और नैतिकता को श्रेष्ठ बताया गया है।

सामाजिक उपयोगिता पद्मपुराण की कथाएँ :

- सामाजिक सौहार्द को बढ़ाती हैं।
- जातिगत भेदभाव को समाप्त करती हैं।
- नैतिक शिक्षा को सरल और कथात्मक में जनमानस तक पहुँचाती हैं।
- पर्यावरण-संरक्षण जैसे आधुनिक मुद्दों को धार्मिक आधार प्रदान करती हैं।
- परिवार और समाज में नैतिक अनुशासन स्थापित करती हैं।

निष्कर्ष – पद्मपुराण में वर्णित लोककथाएँ केवल धार्मिक आख्यान नहीं, बल्कि भारतीय समाज की नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रीढ़ हैं। वे मनुष्य को सत्य, दया, भक्ति, अहिंसा, समता, संयम और पर्यावरण-प्रेम जैसे मूल्यों की ओर प्रेरित करती हैं। ये कथाएँ न केवल पुरातन भारत के लोकजीवन का चित्रण करती हैं, बल्कि आज के युग में भी समान रूप से प्रासंगिक हैं। अत: स्पष्ट है कि पद्मपुराण की लोककथाएँ भारतीय नैतिक दृष्टिकोण के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे व्यक्ति में सामाजिकता, धर्मबोध और मानवीय संवेदनाओं का विकास करती हैं। अत: यह अध्ययन भारतीय पुराण-साहित्य की अमर परम्परा का मूल्यवान साक्ष्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पद्मपुराण – गीता प्रेस, गोरखपुर संस्करण।
2. शर्मा, सत्यव्रत – महापुराणों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. द्विवेदी, हजारीप्रसाद – भारतीय संस्कृति और पुराण कथा।
4. तिवारी, सुरेश चन्द्र – पुराणों का समाज-दर्शन।
5. शुक्ल, रामचन्द्र – लोककथा और भारतीय संस्कृति।
6. Winternitz, M.- History of Indian Literature] Vol. I–II.
7. Pargiter, F.E. - Ancient Indian Historical Tradition. वृक्षाणां संरक्षणं धर्मो महत्तम:।

****